मृदा उर्वरता में सहायक है जीवामृत

कृषि कुंभ (नवंबर 2023),
खण्ड 03 अंक 06, पृष्ठ संख्या 100–102

मृदा उर्वरता में सहायक है जीवामृत

राकेश कुमार[1], डॉ प्रभात कुमार चतुर्वेदी[2], डॉ महेंद्र प्रताप गौतम[3], गीतांजली कुमारी[4] एवं सुजीत कुमार[5]

[1,4,5]शोध छात्र, [2]विभागाध्यक्ष
सस्य विज्ञान विभाग,
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
[3]वि. व. वि. (कीट सूत्रकृमि विज्ञान),
कृषि विज्ञान केंद्र लदौरा, आजमगढ़, भारत।

Email Id: rakeshagronomy0844@gmail.com

हरितक्रांति के बाद से खेती में जमकर रासायनिक उर्वरक का इस्तेमाल हुआ। इससे जमीन की संरचना ही बदल गई है। इस कारण तेजी से खेती योग्य भूमि बंजर होती जा रही है। फसल की पैदावार पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।इसको देखकर सरकार ने किसानों की आय दोगुनी करने व मिट्टी की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने को कई तरह के उपाय किए हैं। जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। खेतों की उर्वरा शक्ति को बरकरार रखने के लिए वर्तमान में जीवामृत का सहारा लिया जा रहा है

पौधों के समुचित वृद्धि, विकाश और स्वास्थ्य एवं अधिक पैदावार के लिए अच्छी गुणवत्ता वाले जैविक खाद और अन्य पदार्थो की आवश्यकता होती है। मिट्टी की गुणवत्ता बढ़ाने और फसल के अधिक उत्पादन के लिए जीवामृत गार्डनिंग के क्षेत्र में वरदान है। जीवामृत मिट्टी में कार्बनिक अवशेषों को सड़ने में मदद करता है और मिट्टी को उपजाऊ बनाकर उसकी गुणवत्ता में सुधार करता है। वर्तमान समय में खेती में भारी मात्रा में रसायनों और उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग किया जा रहा है। जिसके कारण मिट्टी की गुणवत्ता में ह्रास होने के साथ सूक्ष्म जीवो की मृत्यु होती जा रही है और कृषिगत भूमि बंजर होती जा रही हैं। साथ ही साथ दिन प्रतिदिन खेती का लागत महंगा होता जा रही है, जिसका मुख्य कारण भारी मात्रा में महंगे रसायनों और उर्वरको का प्रयोग है। इस स्थिति से निपटने के लिए जैविक खाद का महत्व दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। इसी के क्रम में जीवामृत एक तरह का प्राकृतिक तरल उर्वरक होता है, इसे पूर्णतया प्राकृतिक पदार्थों से बनाया जाता है। जीवामृत प्राकृतिक खाद होता है तथा इसका उपयोग कृषि में फसलों का उत्पादन बढ़ाने तथा मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार करने हेतु किया जाता है

जीवामृत एक अत्यधिक प्रभावशाली जैविक खाद है. जिसे गाय के गोबर के साथ पानी मे कई और पदार्थ जैसे गौमूत्र, बरगद या पीपल के नीचे की मिटटी, गुड़ और दाल का आटा मिलाकर तैयार किया जाता हैजीवामृत पौधों की वृद्धि और विकास के साथ साथ मिट्टी की संरचना सुधारने में काफी मदद करता है. यह पौधों की विभिन्न रोगाणुओं से

सुरक्षा करता है तथा पौधों की प्रतिरक्षा क्षमता को भी बढ़ाने का कार्य करता है, जिससे पौधे स्वस्थ बने रहते हैं तथा फसल से बहुत ही अच्छी पैदावार मिलती है वर्तमान समय में किसान काफी बड़ी संख्या में जीवामृत का उपयोग कर रहे हैं और उन्हें जीवामृत से बहुत अधिक लाभ भी हो रहा ळे क्योंकि

जीवामृत सामग्री

जीवामृत बनाना बहुत सस्ता एवं आसान है और इसके लाभ भी बहुत हैं। जो किसान एक बार रसायन युक्त उर्वरक छोड़ कर जीवामृत अपनाते हैं उसका लाभ कई वर्ष तक मिलता रहता है इसके लाभ विभिन्न है

उपज में वृद्धि–जीवामृत का असर खेती में एकदम तो नहीं दिखता पर जब एक बार खेत की मिट्टी में सुधार हो जाता है फिर पैदावार कई गुना तक बढ़ जाती है और प्रति वर्ष उपज में बढ़ोत्तरी दिखने लगती है

रसायनों से मुक्त खाद्य पदार्थ की उपलब्धता– जीवामृत एक रसायन मुक्त उर्वरक है, इसका उपयोग कर के जिन फसलों को उगाया जाता है वह पूर्ण रूपसे रस्दयानो से मुक्त होते है और स्वास्थ्य के बहुत अच्छी होती हैं।

मिट्टी की उर्वरता में सहायक होता है– रसायन युक्त खाद का उपयोग करने से धीरे–धीरे खेत की मिट्टी की उर्वरता ह्रास होने लगती है। जब किसान रासायनिक उर्वरको को छोडकर जीवामृत का उपयोग खेत मंख करते हैं तो मिट्टी की खोई हुई उर्वरता वापस आ जाती है।

फसल में बीमारी कम लगती है–फसल में बीमारी लगने का कारण कई बार मिट्टी भी होती है, जीवामृत के उपयोग से मिट्टी में काफी सुधार होता है इसलिए फसल में बीमारियां भी कम लगती हैं। जो किसान जीवामृत का उपयोग कर रहे हैं उनके द्वारा बताया गया है कि जीवामृत के उपयोग से खेतों में बीमारियां कम लगती हैं।

पर्यावरण को स्वच्छ रखने सहायक दृ जीवामृत का उपयोग खेती में करने से मिट्टी की उर्वरता में वृद्धि होने के साथ मृदा की संरचना में भी सुधार करता है एवं पर्यावरण को स्वच्छ रखने में भी सहायक होता है यह सूक्ष्म जीवो की क्रियाशीलता को बढाने में मदद करता है जिससे उत्पादन में बढ़ोत्तरी देखने को मिलती हैजो किसान जैविक तरीके से खेती करके फसलोत्पादन करना चाहते हैं,तो आसानी से कम से कम लागत में घर पर ही जीवामृत, जैविक खाद और जैविक कीटनाशक तैयार कर सकते हैं. इसमें प्रयोग की जाने वाली अधिकतर सामग्री किसानों के घर में ही मौजूद होती हैं।

तैयार किया गया जीवामृत

जीवामृत तैयार बनाने का विधिया

सामग्री –जीवामृत बनाने के लिये सबसे पहले 10 लीटर गौ मूत्र, 2 किलोग्राम गुड़, 10 किलोग्राम गाय का गोबर और 2 किलोग्राम दाल का बेसन और एक किलोग्राम बरगद के नीचे की मिट्टी एवं पानी, एक बड़ा प्लास्टिक का कंटेनर को एकत्रित कर ले

विधि –सर्वप्रथम छोटे से अन्य बर्तन में 3 किग्रा गुड़ को भुरभुरा पीसकर तीन लीटर पानी में घोल बना ले तत्पश्यात कंटेनर में गौ का मूत्र और बेसन डालकर अच्छी तरह से घोल दें, जिससे बेसन की हर गांठ घुल जाये अर्थात बेसन का प्रत्येक कण संतृप्त हो जाये इसके बाद इसमें गोबर और पानी में घुला हुआ गुड़ का घोल एवं तालाब की मिट्टी डालें, घोल को लकड़ी के डंडे की सहायता से अच्छी तरह मिला देना चाहिये घोल में थोड़ा पानी मिलाकर सातदिनों तक कपडे से ढंककर रख दें और प्रतिदिन लकड़ी के डंडे की सहायता से अच्छी तरह चलाते रहना चाहिये सातदिन बाद इस घोल को पौधों पर कीटनाशक और पोषण के रूप में प्रयोग कर सकते हैं

यह फसलो में विभिन्न प्रकार के रोगाणुओं से सुरक्षा प्रदान है तथा पौधों की रोग प्रतिरोधी क्षमता को भी बढ़ाने का कार्य करता है, जिससे पौधे स्वस्थ बने रहते हैं जिससे फसल से बहुत ही अच्छी उपज प्राप्त होती है. फसल को दी जाने वाली प्रत्येक सिंचाई के साथ 200 लीटर जीवामृत का प्रयोग प्रति एकड़ की दर से उपयोग किया जा सकता है, अथवा इसे अच्छी तरह से छानकर टपक या छिड़काव सिंचाई के माध्यम से भी प्रयोग कर सकते है, जो कि एकड़ क्षेत्र के लिए पर्याप्त होता है. छिड़काव के लिए 10 से 20 लीटर तरल जीवामृत को 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव किया जा सकता है.

जैविक खेती में जीवामृत का महत्वयह प्राकृतिक कार्बन, नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटेशियम और अन्य सूक्ष्म पोषक तत्वों का एक उत्कृष्ट स्रोत है जो मुख्य रूप से जैविक खेती में प्राकृतिक खाद के रूप में उपयोग किया जाता है।

इसका पीएच मान 4–8 से 4–9 के बीच होता है यानी ये अम्लीय है। क्षारिय मिट्टी के पी एच मान को सुधारने के लिए मदद करता है।

कम्पोस्ट और वर्मीकम्पोस्ट जैसे जैविक खाद के अन्य रूपों की तुलना में जीवामृत बहुत आसान तरीके से और जल्दी से तैयार किया जा सकता है।फसल में जीवामृत प्रयोग करने का तरीका भी बहुत आसान है। जमीन की जुताई के समय, खेत मे पानी लगाते समय, ड्रिप सिंचाई के माध्यम से, स्प्रिंकलर के द्वारा, ड्रेंचिंग पद्धति से या खड़ी फसल में छिड़काव करके प्रयोग किया जा सकता है।

इसे सभी तरह के फसलों जैसे की (धान, गेहूं, मक्का, बाजरा, ज्वार इत्यादि), सब्जियों(टमाटर, मिर्च, भिंडी, करेला, लौकी, कद्दू, खीरा, मूली, गाजर, प्याज, लहसिआलू इत्यादि), दलहनी फसल, तिलहनी फसल तथा फलदार पौधे (केला, संतरा, अनार, मौसंबी, नारियल, पपीता, अमरूद इत्यादि) पर प्रयोग किया जा सकता है। इसका फसलों पर कोई बुरा प्रभाव नही पड़ता है।